जन्माष्टमी पर सजाई झांकियां

माई झुं. 24 अगस्त। जन्माष्टमी पर्व पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी केशव विद्या मंदिर में जीवन्त झांकिया सजाई गई। बचपन से कृष्ण कन्हैया की तारणहार तक की 21 जीवन्त झांकियों ने दर्शकों को भाव विभोर कर दिया। समारोह का शुभारम्भ जिला पुलिस अधीक्षक हरिप्रसाद शर्मा ने किया। झाकियों के साथ-साथ सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां भी सराहनीय रही। कार्यक्रम के संयोजक संजय शर्मा थे जिनके कुशल निर्देशन में स्कूल अध्यापकों एवं बच्चों के कार्य सराहनीय रहे। इस अवसर पर बृजकिशोर अग्रवाल, कैलाशचन्द पंसारी, रतनलाल शर्मा, कैलाश सिंघानिया, राधेश्याम तुलस्यान, ए.एन. द्विवेदी, मनोज शर्मा, हरिराम सिंघानिया सहित अन्यजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। महिलाओं व बच्चों का उत्साह देखने योग्य था।

नेतराम मघराज कॉलेज में आनन्द ब्रह्मचारी महाराज के प्रवचन

माई झुं. 25 अगस्त। नेतराम मघराज कन्या महाविद्यालय में सोमवार को कन्या भ्रूण हत्या पर इसकी रोकथाम हेतु एक प्रवचन संगोष्ठि का आयोजन किया गया जिसमें ऋषिकेश के आनन्द ब्रह्मचारी महाराज ने अपने प्रभावी उद्‌बोधन में कहा कि आज मां एक सर्पिणी बन गई है जो गर्भ में ही कन्या को मार देती है। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या को जघन्य पाप बताया। विदित है कि आनन्द ब्रह्मचारी महाराज श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी रामसुखदासजी के सानिध्य में वर्षों रह चुके है तथा अभी लावरेश्वर मंदिर के सामने गोयनका नोहरे में श्री रामकथा एवं नानी बाई के मायरे के आयोजन में आये हुए है। कन्या भ्रूण हत्या पर सातो दिवस अलग-अलग स्कूलों एवं कॉलेजों में प्रभावी उद्‌बोधन दे रहे है जिससे समाज को इस अभिशाप से बचाया जा सके। कॉलेज में आयोजित प्रर्वचन संगोष्ठि की अध्यक्षता कॉलेज प्राचार्य हरिराम रोलन ने की जबकि विशिष्ट अतिथि कॉलेज के दानदाता भामाशाह विश्वनाथ टीबड़ा, रामचन्द्र तुलस्यान, सम्पतराम पुरोहित आदि थे।

रमेश रूंगटा के सानिध्य में सुन्दरकाण्ड सम्पन्न

माई झुं. न्यूज। पूर्वआईएएस रमेश रूंगटा के सानिध्य में बगड़ स्थित नागरिक सदन में सामुहिक एवं संगीतमयी सुन्दर काण्ड पाठ का आयोजन किया गया। पंडित पवन शर्मा के आचायत्व में पूर्व आईएएस रमेश रूंगटा ने पुजा अर्चना कराई। इस अवसर पर बेणीप्रसाद रूंगटा, भरत तुलस्यान, मनीष अग्रवाल, राजेन्द्र रूंगटा, लक्ष्मीनिवास रूंगटा, विनोद कासीमपुरिया, नारायण रूंगटा, सुशील मुरारका, सहित अन्यजन उपस्थित थे।

राजकुमार रिजवी ने भजन संध्या में शमां बाधा

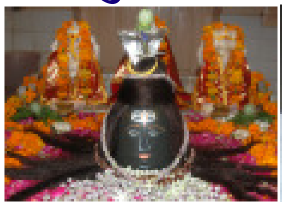

माई झुं. 4 अगस्त। झुंझुनूं पीपली चौक स्थित स्वर्णकार मंदिर में श्रावण माह के उपलक्ष में स्व. सालीगराम सोनी की स्मृति में सोमवार रात्रि को विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. एल.के. झा की गणेश वंदना से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेशनल गजल गायक न्यूयार्क से आये राजकुमार रिजवी थे जो अपनें परिवार के साथ श्रीमती इन्द्रमणी व गायिका रूना व नेहा के साथ भगवान शिव के दर्शन कर सोनी टीवी के कार्यक्रम वार परिवार में हिस्सा लेनेश्वाली गायिका रूना व नेहा ने दर्शकों के आगह पर मोरे पंछी गा रे प्रभु का नाम व स्वयं राजकुमार रिजवी ने राम राम बोले श्याम श्याम से उपस्थित भजन प्रेमियों को मंत्र मुग्धस कर दिया।

सिंघाना के मनीष कर्मचन्दानी, सज्जन दाधीच, रामनिवास सोनी ने, महेन्द्र सोनी, जितेन्द्र शर्मा, संगीत शिक्षक नरेन्द्र चौहान तथा नन्दलाल शर्मा ने भी देर रात्रि तक दर्शकों को बांधे रखा। इससे पूर्व कार्यक्रम आयोजक बाबूलाल कडेल, दयाराम कडेल, राजकुमार व चन्द्रप्रकाश कडेल ने रिजवी परिवार का दुपट्टे ओढाकर स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया। इस भव्य भजन संध्या में स्वर्णकार सेवा समिति अध्यक्ष विश्वनाथ सोनी, सचिव परसराम सोनी, आत्माराम नारनौली, गणेश सोनी, विनोद रोडा, रामस्वरूप सोनी, सुभाष डावर, मातादीन छावर सज्जन सोनी सहित महावीर इन्टरनेशनल अध्यक्ष पी.एल. शर्मा, इन्दिरा नगर समिति के ए.एन. द्विवेदी, हरिप्रसाद शर्मा, देवेन्द्र खत्री, पूर्व पालिका उपाध्यक्ष पवन पुजारी, सृजन अग्रवाल, सुधा शर्मा सहित शहर में अनेक गण्मान्य लोग उपस्थित थे।

जन्माष्टमी पर काटा केक और पंचामृत से किया अभिषेक

माई झुं. 24 अगस्त। जन्माष्टमी के पावन पर्व पर श्री श्याम मंदिर झुंझुनूं में प्रभु श्याम का पंचामृत से अभिषेक किया गया। इससे पूर्व भजनों की शानदार प्रस्तुतिया भजन गायकारों ने देकर वातावरण को कृष्णमय बना दिया।

श्री श्याम प्रभु जिन्हें कृष्ण के रूप में माना जाता है का आलोकिक श्रृंगार पंचामृत से अभिषेक के पश्चात किया गया। ठीक 12 बजे कृष्णजन्म का उत्सव हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 11 किलो कलाकन्द का केट काटा गया तथा बधाई बांटी गई। बधाई में पंचमेवा, खिलौने, पंजीरी प्रसाद आदि उपस्थिति भक्तों में श्रृद्धां के साथ वितरित किये।

इस अवसर पर श्री श्याम संकीर्तन मण्डल के अध्यक्ष भरत तुलस्यान, सचिव विनोद सिंघानिया, कोषाध्यक्ष दिनेशचन्द अग्रवाल, सुरेश गुप्ता चिड़ावावाले, ओमप्रकाश भोजराजका, सुशील रिंगसिया, रामोतार चौमाल सहित अन्यजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

राजकुमार खेतान का निधन

माई झुं. 28 अगस्त। इस्लामपुर निवासी चिड़ावा प्रवासी घनश्याम जी खेतान के सुपुत्र राजकुमार खेतान का निधन हो गया। कुछ दिनों से वे जयपुर दुर्लभजी अस्पताल में उपचार ले रहे थे जहां 27 अगस्त सायंकाल उनका निधन हो गया। उनके छोटे भ्राता विमल कुमार खेतान है जो चिड़ावा में ही गल्ले के व्यवसायी है। वे अपने पीछे दो पुत्र (अविवाहित) तथा एक पुत्री छोड़ के गये है। पुत्री श्रीमती कंचन का विवाह झुंझुनूं के विजय कुमार के सुपुत्र सुनील कुमार तुलस्यान के साथ हुआ है।

पेंशनरों के लिए दस निजी दवा विक्रेता अधिकृत

झुंझुनू, ३१ जुलाई: जिला कलेक्टर टी. रविकान्त ने वित्ता विभाग के निर्देशानुसार जिले में पेंशनरों की सुविधा के लिए आठ स्थानों पर दस निजी दवा विक्रेताओं को भी अधिकृत किया है। यह व्यवस्था शुक्रवार एक अगस्त से प्रभावी हो जाएगी।

कोषाधिकारी हरिश्चन्द्र रोहिला ने बताया कि खुली निविदा के जरिये दरें आमंत्रित कर जिन दस निजी दवा विक्रेताओं को अधिकृत किया गया है, उनके नाम हैं- झुंझुनू में श्रीदेवी ड्रग स्टोर, इन्दू मेडिसिन सेण्टर व बालाजी मेडिकल्स, उदयपुरवाटी में जय अम्बे मेडिकल्स, खेतड़ी में विष्णु मेडिक्योर, बुहाना में चौधरी मेडिकल्स, मलसीसर में विकास मेडिकोज, बिसाऊ में नवजीवन मेडिकोज, चिराना में केशव मेडिकल स्टोर तथा मण्डावा में हरि मेडिकल एण्ड प्रोविजन स्टोर। उन्होंने बताया कि पेंशनर अब एक अगस्त से उक्त अधिकृत विक्रेताओं से भी नि:शुल्क दवाइयां प्राप्त कर सकेंगे।

सेठ मोतीलाल कालेज में ऊर्जा संरक्षण पर संगोष्ठी

माई झुं. न्यूज। सेठ मोतीलाल कालेज में एनएसएस के तत्वावधान में ऊर्जा संरक्षण पर संगोष्ठी हुई। संगोष्ठी में प्राचार्य डा. वीके शर्मा व उपप्राचार्य डा. आरके कटेवा ने ऊर्जा की महत्ता एवं उत्पादकता की जरूरत पर बल दिया।

कार्यक्रम में डा. एनके शर्मा, डा. आशीष गर्ग, डा. अनूप शर्मा, डा. राजेश निर्वाण ने ऊर्जा के मितव्यता व ऊर्जा के विभिन्न स्त्रोतों के बारे में बताया। संचालन डा. डीपी सिंह ने किया। डा. सुशील त्यागी ने आभार व्यक्त किया।

मृतवत लेटे रहो अपलक घूरो

माई झुं. न्यूज। विधि- मृतवट लेटे रहों। क्रोध से क्षुब्ध हाकर उसमें ठहरे रहो। या पुतलियों को घुमाए बिना एकटक घूरते रहो या कुछ चूसो और चूसना बन जाओ। मृतवत लेटे रहो।

प्रयोग करो कि तुम एकाएक मर गये हो शरीर को छोड दो क्योंकि तुम मर गये हों बस कल्पना करो कि मैं मृत हूं, शरीर को नहीं हिला सकता हूं। आँख भी नहीं खोल सकता हूं, मै चीख भी नहीं सकता हूं। मैं रो भी नहीं सकता हूं मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ, मै मरा हुआ हूं और तब देखो, अनुभव करो कि तब कैसा लगता है लेकिन अपने आपको धोखा मत दो। तुम शरीर को थोड़ भी मत हिलाओ यदि मच्छर मक्खी भी आ जाये तो भी शरीर को मृत ही समझो। यह बहुत ही बहुत उपयोग की विधियों में से है।

रमण माहर्षि इस विधि से ज्ञान को उपलब्ध हुये थे। जब वे केवल चौदह या पन्द्रह वर्ष के थे एक रात अचानक रमण को लगा कि मैं मरने वाला हूं उनके मन में यह बात बैठ गई कि मृत्यु आ गई है वे अपना शरीर भी नहीं हिला सकते थे। उन्हें अचानक घुटन महसूस हुई और वे जान गए कि उनकी हृदय गति बंद होने वाली है और वे चिल्ला भी नहीं सके, बोल भी नहीं सके कि मैं मर रहा हूं। रमण को अपनी चेतना पर तो पूरा अधिकार था, लेकिन अपने शरीर पर बिलकुल भी नहीं। वे जानते थे कि मैं हूं चेतन हूं सजग हूं लेकिन मैं मरने वाला हूं। उन्होंने सारे प्रयत्न छोड़ दिये और मृत्यु का इंजार करने लगे। धीरे-धीरे उनका शरीर सख्त हो गया। शरीर मर गया लेकिन एक समस्या खड़ी हो गई। वे जान रहे थे कि शरीर नहीं लेकिन मैं तो हूं। वे जान रहे थे कि मैं जीवित हूं और शरीर मर गया है। फिर धीरे--2 उस स्थिति में वापस आये। सुबह से शरीर भी स्वस्था था लेकिन वे मृत्यु को जान गये थे। रमण ने एक नये लोक व चेतना के नये आयाम को जान लिया था और इस लिए घर छोड़ दिया।

मृतवत लेटे रहो। क्रोध से क्षुब्ध होकर उस में ठहरे रहो निश्चय ही जब तुम मर रहे हो तो वह कोई सुख का क्षण नहीं होगा वह आनन्दपूर्ण नहीं हो सकता, जब तुम देखते हो कि तुम मर रहे हो। भय पकडेगा मन में क्रोध उठेगा या विषाद, उदासी, शोक, संताप, कुछ भी पकड़ सकता है। क्रोध से क्षुब्ध होकर उसमें ठहरे रहो स्थिर रहो। यानी हर अवस्था में स्थित रहो आवेग, आवेषों को शरीर में क्रिया मत करने दो वे भी वहीं रहे और आप भी स्थिर, मृतवत कुछ भी हो, पर हलचल ना हो या पुतलियों को घमाए बिना एकटक घूरते रहो। आँखों से घूरना अच्छा है, क्यांकि उसमें तुम तीसरी आंख में स्थिर हो जाते हो और एक बार तुम तीसरी आँख में थिर हो गये तो चाहने पर भी तुम पुतलियों को नहीं घुमा सकते। वे भी थिर अचल हो जाती है।

कुछ चूसो और चूसना बन जाओ किसी भी चीज को चूसो। हवा को ही चूसो, लेकिन तब हवा को भूल जाओ और चूसना ही बन जाओ। सूत्र कहता है कि पीछे मत खडे रहो, कृत्य में भी सम्मिलित हो जाओ और चोषण बन जाओ। यह प्रयोग तुम किसी भी चीज के साथ कर सकते हो तुम दौड़ रहे हो तो दौडना ही बन जाओ और दौडने वाले न रहो। यह कुछ सरल विधिया है लेकिन बहुत महत्त्वपूर्ण है।

आचार्य हरिसिंह रोहिल्ला-योग
प्रा.चिकित्सा
अग्रसेन भवन झुंझुनूं मो. 09828486899

मण्डी उपाध्यक्ष मित्तल ने दी गृह प्रवेश पर पार्टी

माई झुं. 8 अगस्त। मित्तल इंडिया कम्पनी हेतमसरिया के सन्तकुमार मित्तल (सन्तु) कृषि मण्डी उपाध्यक्ष ने रीको में नवनिर्मित गृहप्रवेश के शुभ अवसर पर स्वरूचि भोज का आयोजन शुक्रवार रात्रि 8 बजे किया। रीको आवासीय कॉलोनी में वेयर हाउस के समीप बने शानदार नवनिर्मित गृह प्रवेश पर आयोजित उक्त प्रसाद में ताराचन्द गुप्ता भोड़कीवाले, आईटीओ मनमोहन काण्डपाल, सीए रोहित चौधरी, बीरबल सिंह, प्रदीप पाटोदिया, आत्माराम टीबड़ा, प्रमोद खण्डेलिया, सम्पत चुड़ेलेवाला, डी.एन. तुलस्यान, रामनिरंजन बंका, रामचन्द्र बंका, सुरेश हेतमसरिया तथा कजोड़ मित्तल, रमेश मित्तल, प्रदीप मित्तल, नथमल मित्तल सहित परिवारजन मण्डी समिति पदाधिकारी एवं अन्यजन उपस्थित थे।

भाद्रपद के व्रतोत्सव

माई झुं. न्यूज। इस वर्ष भाद्रपद मास 17 अगस्त से 15 सितम्बर 2008 तक रहेगा। इस अवधि में आने वाले प्रमुख व्रतोत्सव इस प्रकार हैं-

पुत्रव्रत : इसके लिए भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को उपवास कर विष्णु पूजन करे और दूसरे दिन ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा इस मंत्र से तिलों की 108 आहुति देकर ब्राह्मणों को भोजन करावे और बिल्वफल खाकर षड्‌रस (मधुर, अम्ल, लवण, कषाय तिक्त और कटु) भक्षण करे। इस प्रकार प्रत्येक कृष्ण सप्तमी करके वर्ष व्यतीत होने पर दो गोदान करे तो पुत्र की प्राप्ति होती है।

जन्माष्टमी (शिव, विष्णु, ब्रह्मवह्नि भवष्यादि) यह व्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को किया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को बुधवार रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि के समय वृक्ष के चन्द्रमा में हुआ था। अत: अधिकांश उपासक उक्त बातों में अपने-अपने अभीष्ट योग का ग्रहण करते हैं। यह सर्वमान्य और पापहनव्रत बाल कुमार युवा और वृद्ध सभी अवस्था वाले नर नारियों के करने योग्य है। इससे उनके पापों की निवृत्ति और सुखादि की वृद्धि होती है। इसमें अष्टमी के उपवास से पूजन और नवमी के पारणा से व्रत की पूर्ति होती है। 15 सितम्बर 2008 से ही महालय श्राद्ध प्रारम्भ हो जायेंगे जो 29 सितम्बर को समाप्त होंगे। शारद नवरात्र 30 सितम्बर से प्रारम्भ होंगे।

महात्तमाख्य शिवव्रत : यह व्रत भाद्रपद शुक्ला प्रतिपदा (एकम) को किया जाता है। इसके लिये शिवजी की सुवर्ण या चांदी की मूर्ति बनाकर कलश पर स्थापित कर यथाप्राप्त उपचारों से पूजा करे नैवेद्य में 48 फल या मोदक अर्पण कर 16 देवताओं को 16 ब्राह्मणों को एवं 16 अपने लिये रखे और प्रसिद्ध देव देवेश चराचर जगदगुरो। वृषध्वज महादेव त्रिनेत्राय नमोनम:। से प्रार्थना कर एक बार भोजन कर व्रत को समाप्त करे। इससे पापनाश एवं राज्य धन पुत्र पौत्रादि स्त्री आरोग्य और आयु आदि की प्राप्ति होती है।

सिद्धि विनायक व्रत : यह भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को किया जाता है। इस दिन गणेश जी का जन्म मध्यान्ह में हुआ था अत: मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। इस दिन रात्रि में चन्द्र दर्शन करने से कलंक लग जाता है। इसके निवारण हेतु स्यमन्तक मणि की कथा श्रवण करना आवश्यक है। इस दिन सिद्धिविनायक की पूजा कर 21 मोदक गणेशजी को अर्पण करना चाहिए। राजस्थान में गणपति चतुर्थी एवं महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में गणेशोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

ऋषि पंचमी भाद्रपद शुक्ल पंचमी को ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या शूद्र वर्ण श्री स्त्रियों को चाहिए कि वे नद्यादि पर स्नान कर घर के शुद्ध स्थल पर हरिद्रा आदि से चौकोर मण्डल बनाकर उस पर सप्तर्षियों का स्थापन करें और गन्ध पुष्प धूपदीप तथा नैवेद्यादि से पूजन कर कश्यपोऽत्रि भर्रद्वाजो विश्वामित्रोऽथगौतम: जगदग्निवीसिठश्च सद्वैते ऋषय: स्मृता:। दहन्तुपापं मे सर्वं गहणन्तु अर्ध्यं नमो नम: से अर्ध्य दे इसके बाद बिना बोई हुई पृथ्वी से उत्पन्न शाकादि का आहार करे। इस प्रकार सात वर्ष करके आठवें वर्ष भी श्री ऋषियों की सुवर्णमयी सात मूर्ति बनाकर कलश स्थापन करके यथाविधि पूजन कर सात जोड़े ब्राह्मण भोजन करके उनका विसर्जन करे।

राधाष्टमी : भाद्रपद शुकला अष्टमी को जगज्जननी पराम्बा भगवती श्री राधा का जन्म हुआ था। अतएव इस दिन राधा-व्रत करना चाहिये। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कृष्णपक्ष में होने से सांवलारंग, तो शुक्ल पक्ष में जन्म होने से राधा का रंग गोरा हुआ। राधाजी कृष्ण की शक्ति है, अत: राधाव्रत को ठीक मध्यान्ह को पूजा करनी चाहिए।

कटि परिवर्तनोत्सव : भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी को भगवान का कटि परिवर्तन करावे इसके लिये देव प्रबोधिनी की भांति सम्पूर्ण विधान बनाकर भगवान को विमान में विराजमान करके गायन वादन, नर्तन कीर्तन और जयघोष के साथ जलाशय पर ले जाय और वहाँ जलपानादि साधनों से दोलायमान करके वापस लाकर संध्या के समय महापूजा और नीराजन करे। रात्रि में भगवान को दक्षिण कटि शयन कराके जागरण करे और दूसरे दिन पूर्वाहन में वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेय द्वादशी तव। पार्श्वेन परिवर्तस्व सुख स्वपिहिमाधव से प्रार्थना करे।

पंडित महावीर प्रसाद पारीक,
शास्त्री एम ए, संस्कृत, बीदासर- बिसाऊ
मोबाईल- 9460513758

रोटरी क्लब नई कार्यकारिणी के चुनाव सम्पन्न

माई झुं. न्यूज। रोटरी क्लब झुंझुनूं शाखा की नई कार्यकारिणी के चुनाव मण्डावा मोड स्थित जायका रेस्टोरेंट में सम्पन्न हुए। जिसमें शेखावाटी अस्पताल के निदेशक सत्येन्द्र चौधरी को रोटरी क्लब झुंझुनूं का अध्यक्ष तथा आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. जितेन्द्र स्वामी को सर्वसम्मति से सचिव चुना गया। कार्यकारिणी में प्रेसीडेन्ट इलेक्ट डॉ. एस.एन. शुक्ला, उपाध्यक्ष एडवोकेट आलोक गौड, संयुक्त सचिव आनंद पुजारी, कोषाध्यक्ष अशोक सोनी, क्लब ट्रेनर रामगोपाल वर्मा, बुलेटिन एडीटर हरीश तुलस्यान को बनाया गया। इस अवसर पर क्लब सदस्य गोकुलसिंह राव, पुस्कर जांगिड़, विनोद ठठेरा, गोविन्द सिंह शेखावत, डॉ. रजनेश माथुर सहित अन्यजन उपस्थित थे। नई कार्यकारिणी के गठन पर रोटरी क्लब सदस्यों ने बधाई देते हुए हर्ष व्यक्त किया है।

पुण्यतिथि 21 अगस्त 2001

स्मृति शेष मधुसूदन तुलस्यान

सातवीं पुण्यतिथि पर हमारी भावभीनी श्रृद्धांजलि..

मर्यादामय व अपने सद्‌गुण की सौरभ का उपासक कर्मठ व्यापारी सादगी जीवन और लायन्स क्लब में 10 वर्ष तक सक्रिय समाज सेवी अपने सपनों का संसार रचाकर जीवन मझदार में अकस्मात अनन्त में विलीन हो गया। बीता हुआ कल आज भी स्मृति मय है और सभी के जीवन का आईना है। यह भावना दिवंगत जीवन के प्रति आस्था जगाये रखती है और वर्तमान काल का मूल्य समझाती है। इस पुण्यात्मा की दिव्य ज्योति का प्रकाश परिवार में सभी को सदा आत्मबल व सदप्रेरणा दे।

भ्राता - कृष्ण मुरारी, शिवशंकर, कुंजबिहारी, राजेन्द्र कुमार
पुत्र - दीपक फुफा - श्याम सुन्दर सर्राफ मुम्बई
माता-पिता - द्रोपती देवी- नंदलाल तुलस्यान, झुंझुनूं
दामाद - संदीप नांगलिया सूरत, नितिन सुरेश हैदराबाद

श्रद्धा और विश्वास

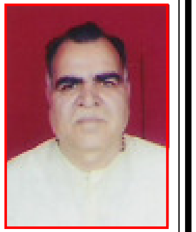

बिना शर्त समर्पण ही श्रद्धा (प्रेम और सेवा)है। यह जीवन को स्नेह सूत्र में बांधे रहती है। दूसरों के प्रति भी सहयोग करने एवं अपने स्वार्थों का उत्सर्ग करने की प्रेरणा देती है। अटूट विश्वास व रूचि से ही आलौकिक मुर्तियों में श्रद्धा उत्पन्न होती है। यह चेतना क्षेत्र में उत्कृष्टता के रूप में अदृश्य से दृश्य बनती है। परिणामस्वरूप श्रद्धावान आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति का सुपात्र होता है। भौतिक जगत में बलिष्ठता,चतुरता और सम्पन्नता के त्रिविध समन्वय का जो प्रतिफल है, उससे कहीं अधिक चेतना क्षेत्र में श्रद्धा की सघनता और प्रखरता पर निर्भर करता है। अत: नित्य हृदयाकाश से श्रद्धा व विश्वास का अमृत बरसता रहे।

नन्दलाल तुलस्यान मुम्बई प्रवासी